HON'BLE LIEUTENANT GOVERNOR OF J&K's SPEECH DURING THE EVENT OF RELEASE OF COMMEMORATIVE POSTAGE STAMP ON LATE WAZIR MOHD HAKLA POONCHI OF DISTRICT POONCH, J&K ON 24TH OF JULY 2024 AT RAJ BHAWAN, SRINAGAR, J&K.

मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से यह अत्यंत भावुक पल है और मैं भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी का तथा भारतीय डाक विभाग का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने चौधरी वजीर मोहम्मद हकला साहब पर डाक टिकट देश की ही स्मृति में नहीं बल्कि दुनिया के स्मृति में पुनः उन्हें जीवित बना दिया है

मैं चौधरी साहब के परिवार के सदस्यों का भी और आप सबका राजभवन में स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता हूं। आज के समारोह में आप सबको बधाई भी देता हूं।

देश के लगभग हर हिस्से में सार्वजनिक जीवन, सामाजिक सेवा और साहित्य से जुड़ी पुरानी पीढ़ी चौधरी वजीर मोहम्मद साहब के व्यक्तित्व से परिचित है। राजनीति, समाज सेवा, साहित्य, भाषा, सांस्कृतिक उत्थान, वंचित वर्गों का सशक्तिकरण यानी एक राष्ट्र और समाज के जीवन के जितने भी पहलू हैं, उन सभी पर चौधरी साहब ने अपनी य कमिट छाप छोड़ी।

उर्दू शायरी के उस्ताद मिर्जा गालिब ने प्रदीप खन्ना साहब को सुनकर मुझे याद आया। एक बार तकी मीर साहब की महानता को स्वीकार करते हुए कभी लिखा था - रेख़्ता के तुम ही उस्ताद नहीं हो ग़ालिब,
कहते हैं अगले ज़माने में कोई मीर भी था। । और बाद में उर्दू के ही ज़ौक़ को भी यह कहना पड़ा -

"न हुआ, न हुआ मीर का अंदाज़ नसीब,
ज़ौक़ यारों ने बहुत ज़ोर ग़ज़ल में मारा।"

इसीलिए मैं समझता हूं **चौधरी वजीर मोहम्मद साहब भारत माता के सच्चे सपूत होने के साथ-साथ सार्वजनिक जीवन और समाज सेवा के क्षेत्र के मीर तकी मीर थे।**

अगस्त 1977 में देहावसान के पहले लंबे समय तक, कई दशकों तक चौधरी साहब का जमाना ऐसा था। उनके सामाजिक और राजनीतिक विचार सार्वजनिक जीवन से जुड़े लोगों के लिए दिशा निर्देश की तरह काम करते थे। उस दौर में जो लोग व्यक्तिगत रूप से उनसे नहीं मिल पाए थे, वह भी जनजातियों के उत्थान, कमजोर वर्गों के उत्थान और विशेष रूप से देश के गुर्जर समुदाय की एकता के लिए उनके संघर्ष से वाकिफ थे।

उनके कर्मठ और त्याग पूर्ण सार्वजनिक जीवन की अनेक उपलब्धियां हैं, लेकिन मैं मानता हूं चौधरी साहब का जो सबसे बड़ा योगदान धर्म और उपासना पद्धति से परे जाकर देश भर के गुर्जर समुदाय चाहे व हिंदू हो, मुसलमान हो, सिख हो, जैन हो, उन्हें इकट्ठा करना था। और केवल जातीय समूह के लिए इकट्ठा नहीं करना था बल्कि देश के सम्मान के लिए इकट्ठा करना था।

उनका नेतृत्व और मार्गदर्शन सिर्फ पुंछ तक सीमित नहीं था और यह कहना कि पुंछ के लाल, मैं समझता हूं, एक छोटा होगा उनके कद को करना। ***वह भारत माता के लाल थे।***

उनकी दूरदर्शिता की चर्चा गुजरात हो, महाराष्ट्र हो, मध्य प्रदेश हो, राजस्थान हो, पंजाब हो, हिमाचल प्रदेश हो और दिल्ली, हर जगह होती है। जम्मू कश्मीर के गुर्जर बकरवाल के अलावा यहां के बाकी समाज के लोगों के मन में भी, दिल में भी, जो आदर था उनके लिए, वह उनके व्यक्तित्व को बिल्कुल अलग बनाता है।

देश के दूसरे हिस्सों में रह रहे हिंदू, सिख, गुर्जर और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए भी उन्होंने जीवन पर्यंत आंदोलन किया। उनके गरिमा पूर्ण सम्मानजनक जीवन के लिए अथक प्रयत्न किया।

मेरे पूर्व भी बताया लोगों ने 1965, 1968 और 1973 में आयोजित अखिल भारतीय गुर्जर महासभा की बैठक में उन्होंने आदिवासी और वंचित वर्ग केंद्रित नीतियों और कार्यान्वयन की मांग और प्रस्ताव उस सभा में रखा था। उस दौरान अपने विचारों एवं लेखनी से वह **निरंतर गोजरी भाषा के संरक्षण और प्रसार के लिए भी कार्य करते रहे।**

उनके मन में परोपकार एवं सामाजिक नैतिक मूल्यों के प्रति जो दृढ़ता थी, उसने राष्ट्रीयता की भावना को और मजबूत बनाया। **इब्तिसाम चौधरी साहिबा का मैंने एक लेख पढ़ा थ**ा जिसमें उन्होंने लिखा था 1958 में जब गुर्जर समुदाय को हिमाचल में जनजाति का दर्जा प्रदान किया गया था, तब चौधरी साहब स्वयं एक सम्मेलन में भाग लेने गए थे।

और **जम्मू कश्मीर में गुर्जर बकरवाल समुदाय के लिए आदिवासी दर्जा प्राप्त हो इसकी मांग राष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने रखा और उनके उत्थान के लिए शानदार नेतृत्व भी प्रदान किया।**

मैं मानता हूं कि चौधरी साहब के प्रयासों का ही परिणाम था 1965 में देश भर के हिंदू, मुस्लिम, सिख गुर्जर समुदाय ने जम्मू कश्मीर के गुर्जर बकरवाल समुदाय के **आदिवासी स्टेटस की डिमांड को अपना समर्थन दिया। चौधरी साहब के संघर्ष का ही परिणाम था दे त्यागने के 14 वर्ष बाद अंतत 1991 में गुर्जर बकरवाल लोगों को ट्राइबल का दर्जा दिया गया।**

यह सच है कि ट्राइबल दर्जा मिलने के बावजूद संविधान के तहत जो लाभ और जो ताकत समुदाय को मिलनी चाहिए थी, वह कहीं ना कहीं नहीं मिल पा रही। मैं किसी को दोष नहीं दूंगा, लेकिन मुझे लगता है कि इस पर जरूर कभी समय विचार करेगा। और मैं कह सकता हूं कि क्यों और कैसे यह हुआ, यह शोध का विषय है, रिसर्च का विषय है।

वंचित समाज के वंचित लोग चाहे वो किसी भी धर्म से हो, किसी जात से हो, मैं समझता हूं कि शासन का य दायित्व होता है ऐसे लोगों को मुख्य धारा में लाने के लिए प्रयत्न किया जाए। यह मेरा कोई व्यक्तिगत या राजनीतिक ओपिनियन नहीं है बल्कि इतिहास की एक सच्ची कड़वाई है, एक कड़वी सच्चाई है।

गुर्जर बकरवाल समुदाय के बुजुर्ग इस बात से वाकिफ है, देश की संसद के द्वारा दिए गए जो कानून थे किन परिस्थितियों में यहां लागू नहीं हो पा रहे थे, क्यों इससे वंचित रखा गया।

मैं एक बात जरूर यह कहना चाहूंगा, 2019 में जो माननीय प्रधानमंत्री जी ने एक फैसला लिया, 5 अगस्त को एक जंजीर जो थी वो टूटी। उससे मैं समझता हूं कि ढेर सारी सुविधाएं या वह लाभ जो संवैधानिक रूप से, कानूनी रूप से समुदाय को मिलना चाहिए था, आज वो मिलने लगा है।

और जो कुछ हुआ है, मैं समय नहीं है कि मैं उस पर बहुत विस्तार से जाऊं। कल ही बजट जो देश का प्रस्तुत हुआ है, भारत सरकार ने जिन नौ प्राथमिकताओं को देश के सामने रखा, उसमें प्रधानमंत्री **जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान यह सर्वोच्च नव प्राथमिकताओं में शामिल है,** जो आदिवासी बहुल गांव और आकांक्षी जिलों के आदिवासी परिवारों के सामाजिक आर्थिक उत्थान के लिए भविष्य में डेडिकेटेड तरीके से काम करेगा।

मुझे कम उदाहरण मिले हैं। मैं भी मोटे तौर पर लंबे समय से सामाजिक जीवन में हूं। देश का प्रधानमंत्री एक समूह के आत्म सम्मान और उसके गौरव तथा गरिमा को ऊपर ले जाने के लिए तपस्या के साथ समर्पण भाव से रिसोर्सेस जुटाने में लगा हो, य इतिहास में उदाहरण कम मिलते हैं।

मुझे एक किस्सा याद आ रहा है। आप में से कुछ लोग इसको सुने भी हैं। जब लोग जाते थे पहाड़ों पर काफी समय लगता था। एक फैसला हुआ कि चाहे वह आपके पशु हो, चाहे लोग, उनको प्रशासन वाहन उपलब्ध कराए।

तो जब स्टेट ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन की बस जा रही थी उस पर इसी समुदाय के लोग थे। किसी ने कहा कि साहब ये स्टेट हट गया है, अब केवल ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन लिखा है। उसमें एक नौजवान था। नौजवान ने जो उत्तर दिया वह आकर के मुझे बताया गया। उसने कहा, हा साब स्टेट तो हट गया लेकिन हम लोग को इस बैठने का पहली बार अवसर मिला है।

जो काम दो महीने डेढ़ महीने में होता था, तीन चार घंटे में हो जा रहा है।

मुझे लगता है कि गर्मी के समय में पहाड़ की ओर जाना, पैदल चलना निश्चित रूप से कठिन था। अनेक इंतजामात किए गए हैं। मोबाइल वैन हो, मोबाइल पशु चिकित्सालय हो, मिनी सीड फ़ार्म हो, मिनी डेयरी हो। रोजगार और शिक्षा के लिए अवसर हो। यह अनेक काम किए गए हैं।

और यह प्रधानमंत्री जी की सर्वोच्च प्राथमिकता का काम है। इसलिए हमारा प्रशासन इस काम को शिद्दत से करता है। मैं इसे चौधरी साहब जैसे महान व्यक्तित्व के लिए भी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि के रूप में देखता हूं।

और मैं यह कहना चाहूंगा कि जहां तक हम पहुंचे हैं, अभी लंबा रास्ता तय करना है। और समाज के प्रबुद्ध जनों से जरूर मैं आग्रह करूँगा कि कुछ लोग बराबर भ्रम में रखने की कोशिश करते हैं और बड़ा जल्दी समाज भ्रम में आता भी है।

कई मुखौटे लेकर के लोग चलते हैं और मुखौटों मेे राजनीतिक रुटिया भी सेख ली जाती है।

लेकिन चौधरी साहब के व्यक्तित्व का एक दूसरा पक्ष रहा, जिसका मुझे उल्लेख करना आवश्यक लगता है। चौधरी साहब ने गुर्जर बकरवाल समुदाय को भारत की सुरक्षा प्रणाली का प्रमुख अंग बनाने में भी सबसे बड़ा योगदान किया।

दुर्गम पहाड़ियों की गोद में पलने वाले य वीर आदिवासी परिवार भारतीय सेना की आंख और कान बन गए थे। इतिहास साक्षी है शक्ति, शौर्य और समर्पण का प्रतीक यह समुदाय, ये भारत माता की रक्षा को सदैव सर्वोपरि रखा।

भारत के इतिहास में भी यह जिक्र बराबर रहेगा। 60 के दशक में पड़ोसी मुल्क की नापाक हरकतों का मुँह तोड़ जवाब देने के लिए चौधरी साहब ने केंद्र सरकार से अनुरोध किया था भारतीय सेना में गुर्जर रेजीमेंट अलग से बनाई जाए।

सामाजिक स्तर पर भी वह समुदाय के जवानों को भारतीय सेना के अभिन्न अंग के रूप में कार्य करने के लिए सदैव प्रेरित करते रहे। और संपूर्ण देश इस बात का साक्षी है, 1965 और 1971 युद्ध में चौधरी साहब के नेतृत्व में जम्मू कश्मीर के गुजर बकरवाल समुदाय ने अद्भुत वीरता दिखाई थी और राष्ट्र के विजय अभियान में महत्त्वपूर्ण योगदान भी दिया।

आज एक बार फिर से आतंकवादी मुल्क पाकिस्तान जम्मू संभाग में शांति भंग करने का कुषित प्रयास कर रहा है। तरक्की की गति को रोकना चाहता है। पुंछ, रजौरी से लेकर कठुआ, रियासी, डोडा में जो लोग अपना उज्जवल भविष्य निर्माण करना चाहते हैं, उनके परिवारों को निशाना बनाया जा रहा है।

मैं आप सबसे जरूर निवेदन करूंगा, आतंकवाद के खिलाफ अगर वास्तव में हम इस कार्यक्रम में सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं चौधरी साहब को, तो आतंकवाद के खिलाफ मुट्ठी बांधकर एक साथ खड़ा होना यह वक्त की जरूरत है।

गुर्जर बकरवाल बॉर्डर पर फर्स्ट लाइन ऑफ डिफेंस माने जाते रहे हैं। इसलिए मैं अनुरोध करूंगा सुरक्षा एजेंसियों को सही सूचना मिले। ड्रग नेटवर्क कैसे निस्त-नाबूद हो, इसमें भी आपकी मदद की जरूरत है।

आतंक और ड्रग स्मगलिंग के नेटवर्क को जो सपोर्ट कर रहे हैं, वह किसी कौम और किसी जात के नहीं। अगर ऐसे लोगों के खिलाफ कारवाई होती है तो मैं समझता हूं इसका स्वागत होना चाहिए।

हमारे समुदाय का है, हमारी जाति का है, हमारे धर्म का है — जब यह बात खड़ी होती है तो कठिनाई निश्चित रूप से पैदा होती है। आप सभी इस बात को हमेशा याद रखें कि पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा किए गए रक्त के बूंद का हिसाब होगा और जरूर होगा और ठीक से होगा।

मैं एक बार फिर से चौधरी वजीर मोहम्मद साहब हकला जी के स्मृति में जारी किए डक किए गए डाक टिकट के अवसर पर डिपार्टमेंट ऑफ पोस्ट को हृदय से धन्यवाद देता हूं, माननीय प्रधानमंत्री जी को हृदय से धन्यवाद देता हूं।

और पूरे देश तथा जम्मू कश्मीर के गुर्जर बकरवाल समुदाय के साथ-साथ जम्मू कश्मीर के हर नागरिक को विशेष रूप से बधाई देता हूं। उनके परिवार जनों को बधाई देने की औपचारिकता पूरी करता हूं क्योंकि वह ऐसे लोग किसी परिवार के नहीं होते, वह देश के होते हैं।

गुर्जर बकरा वाल समुदाय दिन प्रतिदिन मजबूत हो। समुदाय के युवाओं का शौर्य बढ़े और राष्ट्र की सुरक्षा और विकास में उनका अधिकतम योगदान हो। अगर यह हम कर पाए तो मैं समझता हूं यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी चौधरी साहब की स्मृति में।

दो लाइने कह कर के मैं अपनी बात खत्म करूंगा —

हमारे बाद अंधेरा रहेगा महफिल में

हमारे बाद अंधेरा रहेगा महफिल में

बहुत चिराग जलाओगे रोशनी के लिए

बहुत चिराग जलाओगे रोशनी के लिए

बहुत-बहुत धन्यवाद।

जय हिंद।

जय भारत।